NMHS
National Mission on Himalayan Studies

SIMAR

तकनीकी पुस्तिका
लेमनग्रास उत्पादन

संकलन

सिमार, हाट कल्याणी, देवाल, चमोली, उत्तराखण्ड।

सहयोग- गोबिन्द बल्लभ पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण एवं सतत् विकास संस्थान, कोसी, कटारमल, अल्मोडा।

लेमनग्रास की खेती

अन्य नाम – नीबू घास, मालाबार या कोचीन घास आदि।

उपयोगी भाग – पत्ती एवं फूल।

औषधीय महत्व उपयोग – इसकी पत्तियों का प्रयोग लीवर की परेशानियों में होता है। इससे प्राप्त तेल का प्रयोग इत्र, सौन्दर्य सामाग्री व साबुन में किया जाता है। हल्की नींबू जैसी खुशबू वाली इस कार्य को मूख्य रूप से थाई और अन्य दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों के व्यंजनों में प्रयोग किया जाता है चावल को खुशबू प्रदान करने के लिए भी प्रयोग मे लायी जाती है।

भूमि एवं जलवायु –नीबू घास के लिए ऊष्ण तथा समशीतोष्ण जलवायु उत्तम रहती है। उत्तरांचल में १००० मीटर की ऊँचाई तक जहाँ कम वर्षा होती हों, ढालदार पहाड़ियों एवं वारानी भूमि इसकी बढवार के लिए उपयुक्त होती है।

खाद – फसल की उचित बढ़वार के लिए ३ कुन्तल अच्छी सड़ी गोबर की खाद अथवा १.५ कुन्तल केंचुओं द्वारा निर्मित खाद तथा ४०० ग्राम जिंक सल्फेट एक नाली खेत के लिए पर्याप्त होता है।

खेत की तैयारी– नीबू घास के पौधे लगाने से पहले १.५ फीट चौडे सीढीदार खेत ढलान में बना लेते है, अथवा ढलान में सीधे आधा फीट के गढ्ढे बनाकर उसमें खाद की निधारित मात्रा रोपाई से २० दिन पहले मिला देते है।

प्रजातियां – प्रगति, नीमा, कावेरी, कृष्णा, प्रमाण, पी०आर०एल० १६, सी०के०पी० २५

पौध तैयार करने की विधि –इसकी पौध बीज द्वारा नर्सरी में बीज बोकर अथवा पुरानी फसलों की जड़दार कलमों (स्लिप) को अलग-अलग करके पौध तैयार कर लेते है।

रोपाई का समय /तरीका पौध आवश्यकता – सामान्यतः नीबू घास की रोपाई बरसात के मौसम में तैयार कलमों को ८-१० सेमी० की गहराई में रोपा जाता है। एक नाली क्षेत्र में ८०० रिलपध्कलम पर्याप्त होती है।

फसल प्रबंधन – फसल की समय-समय पर निगरानी करते हैं। इसकी पहली निराई गुडाई १ माह बाद करनी चाहिए तथा दूसरी निराई गुडाई पहली गुडाई के ३-४ सप्ताह के बाद करनी चाहिए. फसल में जल भराव की स्थिति न होने दे ताकि बीमारी का प्रकोप न हों गर्मी के मौसम में पानी की कमी होने पर पलवार बिछाते है जिससे खरपतवार नियंत्रित रहते है, साथ ही पर्याप्त नमी बनी रहती है।

कटाई का तरीका – रोपाई के ६०-१०० दिन के बाद प्रथम कटाई की जाती है। मृदा उर्वरता तथा वृद्धि के अनुसार बाद की क्यों ६० ७५ दिन के अन्तराल में की जाती है इसे भूमि की सतह से १०-१५ सेमी उपर से काटते है तथा पत्तों को कुट्टी बनाकर छाया में सुखाकर भण्डारित करते है ।

संभावित उपज/लाभ – एक नाली खेत से १६०० किग्रा ताजे पते प्राप्त होते है जो सूखने पर २०० किग्रा रह जाते हैं और १ नाली क्षेत्रफल में लगभग ३१२५.०० की लागत लगती है उसे काटकर ४० रु० प्रति किग्रा का दर से बेचने पर लगभग ४८७५ रु० की शुद्ध लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

कृषिकरण लागत (प्रतिनाली)

भूमि तैयारी –	२५०.०० रू०	विकी मूल्य प्रति किग्रा–	४०.०० रू०
रोपण सामग्री –	५००.०० रू०	प्रतिनाली कुल लाभ–	८०००.००रू०
गोबर की खाद–	६२५.०० रू०	प्रति नाली शुद्ध लाभ –	४८७५.०० रू०
पौध संरक्षण –	२००.०० रू०		
इन्टरकल्चर –	३००.०० रू०		

कटाई और प्रोसेसिंग कुल– ३१२५.०० रू०